ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

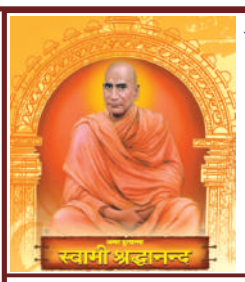

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज
94वें बलिदान दिवस पर
देशवासियों की ओर से
शत-शत नमन

वर्ष 44, अंक 4 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 14 दिसम्बर, 2020 से रविवार 20 दिसम्बर, 2020
विक्रमी सम्वत् 2077 सृष्टि सम्वत् 1960853121
दयानन्दाब्द : 197 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के महान शिष्य, विश्व प्रसिद्ध समाजसेवी एवं एम.डी.एच के चेयरमैन

पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी की भावपूर्ण श्रद्धांजलि सभा सम्पन्न

कोविड निर्देशों के पालन के साथ उमडे जनसैलाब ने दी अपने प्रिय नेता को अश्रुपुरित श्रद्धांजलि पुष्पांजलि-भावांजलि

लगातार चलता रहा यज्ञ पारिवारिक जनों के साथ-साथ प्रियजन एवं आर्यजन भी देते रहे आहुतियां

13 दिसंबर, एस.डी.पब्लिक स्कूल, कीर्ति नगर। राष्ट्र निर्माण एवं मानव सेवा के मसीहा, एम.डी.एच के चेयरमैन पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी की भावपूर्ण श्रद्धांजलि सभा 13 दिसंबर 2020 को एस.डी.पब्लिक स्कूल के प्रांगण में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर महाशय जी के सुपुत्र श्री राजीव गुलाटी जी, पुत्र वधु श्रीमती ज्योति गुलाटी जी, महाशय जी की सुपुत्रियां, दामाद और उनके बच्चों सहित समस्त एम.डी.एच परिवार ने महाशय जी को नम आंखों से भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, महामंत्री श्री विनय आर्य जी, कोषाध्यक्ष श्री विद्यामित्र ठुकराल जी, उपप्रधान श्री ओमप्रकाश आर्य जी, उपप्रधान श्री शिवकुमार मदान जी, आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य के महामंत्री श्री सतीश चड्डा जी, कोषाध्यक्ष श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी, सभा मंत्री श्री कृपाल सिंह जी, अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के महामंत्री श्री जोगेंद्र खट्टर जी, महाशय धर्मपाल वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प के संवर्धक, सहयोग के कार्यकर्त्ता, महाशय धर्मपाल आर्य मीडिया सेंटर की टीम, हवन उत्थान समिति के कार्यकर्त्ता, आर्य वीर दल एवं आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश के वीर-वीरांगनाएं , दिल्ली की लगभग सभी समाजों, शिक्षण संस्थाओं के अधिकारी, कार्यकर्त्ता और सदस्यों के साथ-साथ अनेक राजनैतिक हस्तियों में - पूर्व मन्त्री डॉ. योगानन्द शास्त्री जी, सांसद श्री प्रवेश वर्मा जी, पूर्व कृषि मन्त्री श्री बच्चन सिंह आर्य, पूर्व सांसद श्री महाबल मिश्रा जी, विश्व हिन्दू परिषद के प्रवक्ता श्री विनोद बंसल जी आदि इत्यादि ने मानव सेवा के मसीहा महाशय जी को अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की।

3 घण्टे तक लगातार कतारबद्ध होकर हजारों महानुभावों ने दी महाशय जी को श्रद्धांजलि

सम्पूर्ण विश्व में अपने गुण, कर्म और स्वभाव के कारण अत्यंत लोकप्रिय पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी को हजारों, लाखों नहीं, करोड़ों लोग अपना पथ-प्रदर्शक, आत्मीय सखा, सहयोगी, दीन-दुखियों का मसीहा, महान राष्ट्र प्रेमी, परोपकारी, दानवीर, भामाशाह, कर्मवीर, धर्मवीर, इत्यादि स्वरूपों में जानते और मानते थे। महाशय जी की श्रद्धांजलि सभा में अपने-अपने श्रद्धासुमन अर्पित करने वाले महानुभावों की भावनाओं को देख कर यह स्पष्ट हो गया कि महाशय जी की यश और कीर्ति सदा-सदा के लिए अमर रहेगी।

पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी को श्रद्धांजलि देने के लिए सुसज्जित भव्य मंच एवं शान्ति यज्ञ में आहुतियां प्रदान करते सुपुत्र श्री राजीव गुलाटी एवं पुत्रवधु श्रीमती ज्योति गुलाटी जी।

श्रद्धांजलि देने वालों में दिल्ली एवं दिल्ली एन.सी.आर. की आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्त्ता, सदस्य , गुरुकुलों, कन्या गुरुकुलों, स्कूलों के छात्र-छात्रा, अनेक समाज सेवी संगठनों के अधिकारी, कार्यकर्त्ता तथा अनेक प्रतिष्ठित संस्थानों के महानुभाव उपस्थित हुए।

इससे भी ज्यादा हजारों लोगों ने टवीट्र, ईमेल, फेसबुक, टेलीग्राम, व्हाट्सएप्प इत्यादि सोशल मिडिया के समस्त माध्यमों से अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। इसके अतिरिक्त सैकड़ों लोगों ने महाशय जी के प्रति अपने उद्गार भावांजलि के रूप में रजिस्ट्रों में भी अंकित किए। जिसमें कई लोगों ने दो-दो पेज के अनुभव भी प्रस्तुत किए।

लगातार चलता रहा यज्ञ एवं भजनों का कार्यक्रम

महाशय जी की श्रद्धांजलि सभा में लगभग 3 घण्टों तक लगातार यज्ञ चलता

- शेष पृष्ठ 4-5 पर

वेद-स्वाध्याय

तेरे भरोसे!

त्वे असुर्यं वसवो न्यृण्वन् क्रतुं हि ते मित्रमहो जुषन्त।
त्वं दस्यूँरोकसो अग्न आज उरु ज्योतिर्जनयन्नार्याय।। -ऋक्. 7/5/6
ऋषि : **वशिष्ठः**।। देवता - **वैश्वानरः**।। छन्दः **पंक्ति**।।

शब्दार्थ - वसवः = वसु **त्वे** = तुझसे [आश्रित हो] **असुर्यम्** = प्राणवत्व को, सामर्थ्य को **नि ऋण्वन्** = प्राप्त कर रहे हैं, **हि** = क्योंकि वे **ते** = तेरे **क्रतुम्** = कर्म का **मित्रमहः** = हे मित्र तेजवाले! **जुषन्त** = सेवन करते हैं। **अग्ने** = हे अग्ने! **त्वम्** = तू **आर्याय** = आर्यों, श्रेष्ठों के लिए **उरु** = विस्तृत **ज्योतिः** = ज्योति को **जनयन्** = प्रकाशित करता हुआ **दस्यून्** = दस्युओं, दूसरों का उपक्षय करनेवालों को **ओकसः** = घर से **आजः** = खदेड़ देता है, निकाल देता है।

विनय - हे अग्ने ! तुझमें आश्रय लेकर ये, पृथिव्यादि वसु अपने असुर्य को, प्राणवत्व को, सामर्थ्य को प्राप्त कर रहे हैं, तुझमें ही आश्रय पाकर वसु ब्रह्मचारी लोग भी अपने प्राणवत्व और प्रज्ञावत्व (बल और ज्ञान) को प्राप्त कर रहे हैं। ये वसु इस सामर्थ्य को इसलिए पा रहे हैं, बल्कि तेरे आश्रय को भी इसलिए पा रहे हैं, चूँकि ये तेरे 'क्रतु' का सेवन करते हैं। इस संसार में जो तेरा महान् कर्म चल रहा है उसका ये सेवन करते हैं, उसके अनुकूल आचरण करते हैं। तेरे महान् संकल्प व ज्ञान के अनुसार ये अपना व्यवहार, कर्म करते हैं, विनष्ट हो जाते हैं। हे अग्ने! तुम तो 'मित्रमहः' हो। तुम्हारा तेज मित्र है, स्नेह करनेवाला है। जो लोग तुम्हारे इस मित्र तेज से मैत्री करते हैं वे संसार में 'आर्य' कहलाते हैं, पर जो इस स्नेह करनेवाले तेजे से द्वेष करते हैं, जिन्हें यह तेरा तेज अच्छा नहीं लगता, वे ही 'दस्यु' नाम से पुकारे जाते हैं, क्योंकि, इस तेज से मैत्री करनेवाले ही तेरे इस तेज को, प्रकाश को प्राप्त कर सकते हैं, अतः वे ही तेरा प्रकाश पाकर श्रेष्ठाचरणवाले अर्थात् आर्य बनते हैं। अपने स्वार्थमय क्षुद्र प्रकाश में मस्त रहनेवालों, दूसरे 'दस्यु' लोगों को तेरी विस्तृत ज्योति प्राप्त नहीं होती। दस्यु अर्थात् दूसरों का उपक्षय करनेवाले वे इसलिए बनते हैं, क्योंकि वे स्वार्थान्ध होते हैं, क्योंकि वे प्रकाश से प्रेम न रखने के कारण तेरी विस्तृत ज्योति को न पाकर अपने में अन्धे होते हैं, अतएव जब तू अपने किसी घर में, किसी लोक में विस्तृत ज्योति को प्रकाशित कर देता है तो वहाँ ये अन्धकारप्रिय दस्यु नहीं ठहर सकते, वहाँ से ये निकल जाते हैं। इस प्रकार, हे मित्रमहः! तू आर्यों के लिए महान् ज्योति देता हुआ दस्युओं को निकाल रहा है, इस प्रकार तेरे क्रतु का सेवन करनेवालों को अपना सहारा देता हुआ, ऐसा न करनेवालों को इस परम अवलम्बन से वञ्चित रख रहा है और इस प्रकार तू तेरा सहारा लेनेवालों को प्राण व बल देता हुआ दूसरों को विनष्ट कर रहा है।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

94वें बलिदान दिवस पर स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का पुण्य स्मरण

स्वामी श्रद्धानन्द एक महान व्यक्तित्व

.....वे पक्के अनीश्वरवादी थे, महर्षि की प्रेरणा से वे प्रथम श्रेणी के आस्तिक बन गए। उस समय उनका नाम था मुन्शीराम। महा-नास्तिक बन गया परम आस्तिक युवा मुंशीराम को महर्षि से अनेक बार वार्ता आदि करने के सुअवसर मिलते रहे। महर्षि-प्रदत्त शंका समाधानों ने उनके समस्त संशय, भ्रम आदि समूल नष्ट कर डाले थे। उन्होंने महर्षि को अपना पथ-प्रदर्शक एवं गुरु मान लिया था। एक बार, उन्होंने महर्षि से पूछा, आपने मुझे प्रभु-दर्शन तो कराए ही नहीं। मैंने तुम्हें प्रभु-दर्शन कराने संबंधी वचन बोला ही कब था? ऋषिवर ने उत्तर दिया था। तत्पश्चात् उन्होंने यह मंत्र कह सुनाया - नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो, न मेद्यया न बहुना श्रुतेनपि अर्थात् 'प्रभु की प्राप्ति ईश-संबंधी प्रवचनों के सुनने अथवा तीव्र बुद्धि से या अत्याधिक श्रुतिवान बनने से नहीं हो पाती। जिस किसी पर अपनी कृपा करके प्रभु उसे अपना भक्त चुन लेते हैं, उसे ही प्रभु का सही रूप समझ में आ पाता है। इसी महामंत्र ने मुंशीराम को सदा हेतु आस्तिक बना दिया था।.....

स्वामी श्रद्धानन्द जी भारत के यशस्वी नेताओं में से एक थे। उन्हें महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने कर-कमलों से गढ़ा व राष्ट्र-सेवा हेतु प्रेरित किया। स्वामी श्रद्धानन्द आयु-भर राष्ट्र-सेवा, समाज-सुधार, दलितोद्धार, वेद-प्रचार, पतिता-उद्धार, शुद्धिकरण, महिला- मंडन सरीखे पुनीत कार्यों में जुटे रहे। न थके, न रुके, बस आगे ही आगे बढ़ते गए। स्वामी श्रद्धानन्द एक चमत्कारिक व्यक्तित्व के स्वामी थे। उन द्वारा किए गए अनेक कार्यों को देख-सुनकर प्रत्येक व्यक्ति का आचंभित होना स्वाभाविक है। उनके कुछ एक अनोखे कार्यों का लघु-विवरण -

बदल गई जीवन की राह - सन् 1879 के आस-पास की बात है। अपने पिताश्री के बहुत कहने-सुनने पर वे अनमने मन से बरेली में चल रही महर्षि की एक सभा में जा पहुँचे। इससे पूर्व वे सभी साधु-संन्यासियों को समाज पर भार ही मानते थे। उन्हें कूप-मंडूक माना करते थे। महर्षि की तर्क-संगत व युक्तियुक्त बातें सीधे उनके मन में घर करती गई। वे अनायास महर्षि की ओर खिंचते चले गए। वे पक्के अनीश्वरवादी थे, महर्षि की प्रेरणा से वे प्रथम श्रेणी के आस्तिक बन गए। उस समय उनका नाम था मुन्शीराम। महा-नास्तिक बन गया परम आस्तिक युवा मुन्शीराम को महर्षि से अनेक बार वार्ता आदि करने के सुअवसर मिलते रहे। महर्षि-प्रदत्त शंका समाधानों ने उनके समस्त संशय, भ्रम आदि समूल नष्ट कर डाले थे। उन्होंने महर्षि को अपना पथ-प्रदर्शक एवं गुरु मान लिया था। एक बार, उन्होंने महर्षि से पूछा, आपने मुझे प्रभु-दर्शन तो कराए ही नहीं। मैंने तुम्हें प्रभु-दर्शन कराने संबंधी वचन बोला ही कब था? ऋषिवर ने उत्तर दिया था। तत्पश्चात् उन्होंने यह मंत्र कह सुनाया - **नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो, न मेद्यया न बहुना श्रुतेनपि** अर्थात् 'प्रभु की प्राप्ति ईश-संबंधी प्रवचनों के सुनने अथवा तीव्र बुद्धि से या अत्याधिक श्रुतिवान बनने से नहीं हो पाती। जिस किसी पर अपनी कृपा करके प्रभु उसे अपना भक्त चुन लेते हैं, उसे ही प्रभु का सही रूप समझ में आ पाता है। इसी महामंत्र ने मुंशीराम को सदा हेतु आस्तिक बना दिया था।

'सत्यार्थ प्रकाश' से मिला महा-प्रकाश - सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने के बाद मुन्शीराम जी का जीवन ही बदल गया। यह सन् 1890 की बात है। उनके मन में आर्य समाज के प्रति समर्पण की भावना जाग उठी। शीघ्र ही वे लाहौर आर्य-समाज के अग्रणी नेता माने जाने लगे। धीरे-धीरे वे पूरे राष्ट्र के आर्य नेता बन गए।

मानव-निर्मात्री शिक्षा प्रणाली का उपयोग मुन्शीराम जी प्राचीन भारतीय शिक्षा-पद्धति के परिपोषक थे। उन्हें दृढ़ विश्वास था कि गुरुकुलीय शिक्षा-प्रणाली द्वारा ही मानव-मात्र का बहुमुखी विकास संभव है। इसी लिए उन्होंने गुरुकुल, कांगड़ी की स्थापना की थी। यहाँ पर वैदिक शिक्षा के साथ रसायन- विज्ञान, भौतिकी, प्राणी-विज्ञान आदि जैसे विषय भी पढ़ाए जाते थे। आज यह गुरुकुल एक अग्रणी विश्व विद्यालय के रूप में विश्वभर की ख्याति अर्जित कर रहा है।

राष्ट्र-प्रेम का अनुकरणीय उदाहरण - गांधी जी मुंशीराम जी से बहुत प्रभावित थे। दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटने पर वे सबसे पहले मुंशीराम जी से मिलने हरिद्वार गए थे। वे, मुंशीराम जी को 'बड़ा भाई' कहा करते थे। मुंशी राम जी ने ही सबसे पहले उन्हें 'महात्मा' कहकर पुकारा था। गांधी जी ने उन्हें अमृतसर के कांग्रेस अधिवेशन का स्वागताध्यक्ष बनाया था। इससे कुछ ही समय पूर्व अमृतसर का जलियांवाला बाग काण्ड घटित हुआ था। वहां के लोग सहमे- सहमे से थे। वहाँ पर कांग्रेस का अधिवेशन करवाना एक असंभव-सी बात व टेढ़ी खीर जैसा ही था। पर महर्षि के उस अनन्य भक्त ने असंभव को संभव कर दिखाया। इस सफलता के पीछे थी उनकी राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना। उन्होंने असहयोग आंदोलन में एक अग्रणी नेता के रूप में कार्य किया। देश प्रेम की भावना उनकी रग-रग में समायी थी। इसीलिए अंग्रेज शासक उन्हें शक की निगाहों से देखा करते थे। एक बार एक अंग्रेज अधिकारी ने उनसे पूछा था, आप अपने गुरुकुल में बम भी बनाते है? बनाता हूँ। मेरा प्रत्येक छात्र एक बम ही तो है, उनका सपाट उत्तर था।

राष्ट्र भाषा से अनन्य प्रेम स्वामी श्रद्धानन्द जी को अपने श्रेद्धेय गुरु से स्वराज्य, स्वदेश, स्वभाषा आदि के उच्च आदर्श मानो बपौति में प्राप्त हुए थे। इसीलिए वे हिन्दी भाषा के प्रबल समर्थक बन कर सामने आए। उन्होंने हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष पद पर पर्याप्त ख्याति पाई थी। अमृतसर के कांग्रेस अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष के रूप में उन्होंने अपना भाषण हिन्दी में दिया। कांग्रेस पार्टी के मंच से इससे पूर्व सभी भाषण इंगलिश में ही दिए जाते थे। स्वामी जी ने वर्षों से चली आ रही परंपरा को एक किनारे रख कर अपनी राष्ट्रभाषा का मान बढ़ाया। उन द्वारा स्थापित 'गुरुकुल कांगड़ी' में विज्ञान आदि विषयों सहित सभी विषय हिन्दी में ही पढ़ाए जाते थे। उस काल में विज्ञान आदि विषयों की स्नातक स्तर की पुस्तकें हिन्दी में तैयार करवाना कितना दुष्कर कार्य रहा होगा। महान व्यक्तित्व के प्रति श्रद्धाभाव रखने वाले रेम्जे मेकनाल्ड इंग्लैड के प्रधानमंत्री ने सन् 1924 में उन्होंने लिखा था, यदि कोई ईसा मसीह की मूर्ति बनाना चाहे तो वह स्वामी श्रद्धानन्द जी को अपने सम्मुख बिठा ले तथा उनकी ही प्रतिमूर्ति बना ले। गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका से स्वामी श्रद्धानन्द जी को अपने एक पत्र में लिखा था, आप अपने गुरुकुल के छात्रों को स्वतंत्रता-प्राप्ति के उच्च संस्कारों से सुशोभित कर रहे हैं। भारत लौटने पर मैं आपके चरणों में अपना शीश झुकाना चाहूंगा। स्वामी जी को एक मतान्ध मुस्लिम ने मार डाला था। तब गांधीजी ने कहा था, वे स्वामी श्रद्धानन्द एक वीर योद्धा थे। वीर कभी चारपाई पर पड़ा-पड़ा नही मरता। वह युद्धक्षेत्र में ही वीरगति पाता है। उनकी वीरता से मुझे ईर्ष्या हो रही है। डा. अम्बेडकर के अनुसार वे दलितों के सर्वोच्च नेता थे। अनेक महापुरुषों ने उनके गुणों व कार्यों की जी खोलकर प्रशंसा की है। हमें अत्यंत गर्व है कि हम सब उस संस्था से जुड़े है, जिसका नेतृत्व उस महाबली के हाथों में रहा। उन्हें हमारी ओर से शत-शत प्रणाम। - ***सम्पादक***

94वें बलिदान दिवस पर विशेष स्मरण

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का 94वां बलिदान दिवस

आर्यजगत् की ओर से शत-शत नमन

आर्य समाज की आन-बान और शान के प्रतीक अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी के 94वें बलिदान दिवस पर उन्हें शत-शत नमन। युग प्रवर्तक महर्षि दयानंद सरस्वती जी के महान शिष्य स्वामी श्रद्धानंद जी का जन्म पंजाब प्रांत के जालंधर जिले के तलवन ग्राम में सन 1856 में हुआ। मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानंद बनने से पूर्व आप नायब तहसीलदार बने, उसके बाद में वकालत शुरू की और इन दोनों ही कार्यों में आप एक नास्तिक की तरह जीवन व्यतीत कर रहे थे। बरेली में महर्षि दयानंद सरस्वती जी के प्रभाव से आपके जीवन की धारा ही बदल गई, सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने के पश्चात् वैदिक शिक्षा प्रणाली में जब आपकी श्रद्धा बढ़ी तो आप मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानंद बन गए। सन 1902 में आपने गुरुकुल कांगड़ी और उसके बाद अनेक अन्य गुरुकुलों की स्थापना की। मोहनदास कर्मचंद गांधी को जब 1920 में आपने गुरुकुल के उत्सव पर आमंत्रित किया तो मिस्टर गांधी को महात्मा गांधी नाम आपने ही दिया था। आपने समाज सुधार की शुरुआत प्रथम अपने परिवार से ही की थी, अपने दोनों पुत्र इंद्र और हरिश्चंद्र का विवाह जातिवाद की दीवारें तोड़कर अंतरजातीय विवाह कर मानव समाज के सामने एक प्रेरक उदाहरण प्रस्तुत किया था। 4 अप्रैल सन 1916 को मुस्लिम नेताओं ने आपको दिल्ली के जामा मस्जिद में जब हिंदू मुस्लिम एकता के लिए भाषण देने हेतु आमंत्रित किया तो आपने जामा मस्जिद के मिम्बर से अपना भाषण वेद मंत्र ***"ओम त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता...."*** से प्रारंभ कर

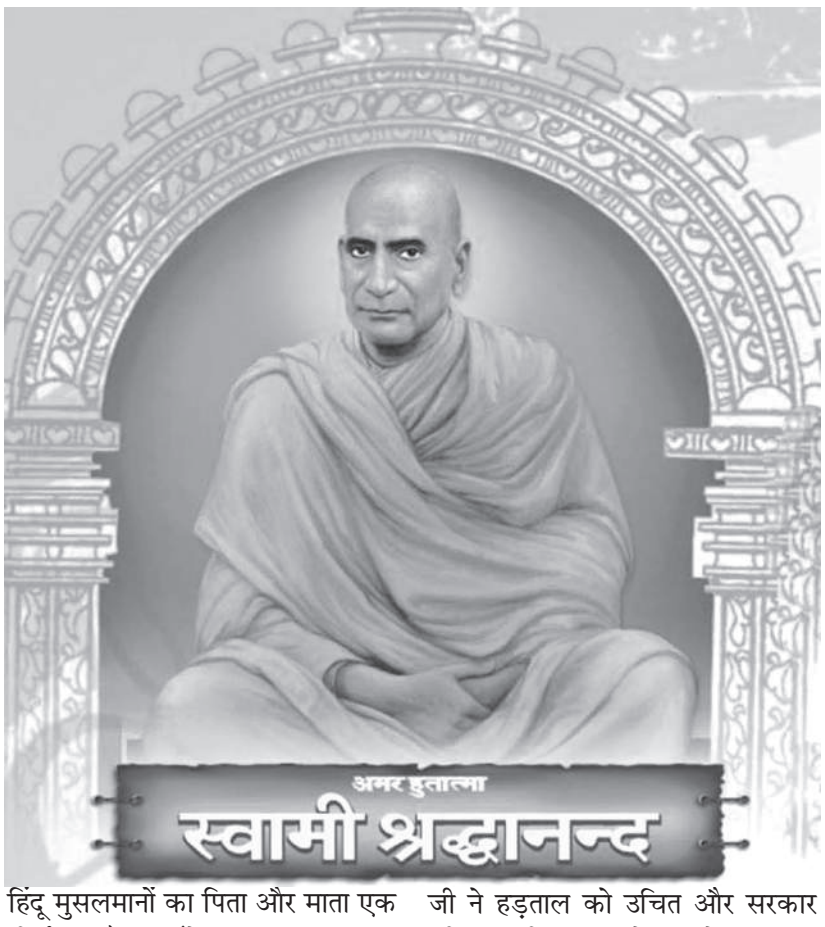

हिंदू मुसलमानों का पिता और माता एक ही ईश्वर है का संदेश दिया। उस समय दिल्ली की गलियों में एक ही नारा गूंज रहा था यह श्रद्धानंद की दिल्ली है।

जब बन्दूकों के सामने सीना तान खड़े हुए स्वामी श्रद्धानन्द

सन 1919 में जब अंग्रेजी हुकूमत ने भारत देश पर रोलेट एक्ट लागू किया तो इस एक्ट के विरोध में 29 मार्च को एक विराट सभा हुई, चारों तरफ से लोग दिल्ली में इस एक्ट का विरोध करने के लिए आने लगे और 30 मार्च को स्वामी जी ने हड़ताल को उचित और सरकार की दमन नीति का विरोध करते हुए जनता से अपने भाषण में कहा कि आप भगवान से प्रार्थना करें और इतनी प्रबल प्रार्थना करें कि सात समंदर पार अंग्रेजों के हृदय परिवर्तित हो जाएं। इसी संघर्ष में 30मार्च 1919 के दिन एक बड़ी घटना घटित हुई, दिल्ली में उस दिन रोलेट एक्ट के विरुद्ध लोगों ने संपूर्ण काम बन्द कर हड़ताल शुरू कर दी, दुकाने बंद करने से लेकर दंगे शुरू हो गए, पुलिस ने लोगों पर गोली चलाना शुरु किया, जिसके कारण चांदनी चौक तक बड़ी भीड़ लग गई, वहां पर भी दंगे होने लगे, पुलिस ने गोलियां चलानी शुरू कर दी, जिसमें 5 लोग शहीद हो गए ,जब स्वामी श्रद्धानंद को पता चला तो वे तत्काल वहां पहुंच गए, उन्होंने वहां लोगों को संबोधित किया ,उस समय वहां पच्चीस हजार के करीब लोग इकट्ठा हुए थे तभी स्वामी जी को पता चला कि घंटाघर पर गोलियां चल रही हैं, स्वामी जी वहां गए और जनता को शांत रहने के लिए कहा, घंटाघर की ओर स्वामी जी को आता देख गोरखा सैनिकों ने स्वामी जी के सामने आकर उनके सीने पर बंदूक तान दी, स्वामी जी ने उद्दंड गोरखा अधिकारी से कहा लो मैं खड़ा हूं तुम गोली चलाओ, उनके चुनौती देने पर कुछ सैनिक आगे भी बढ़े और स्वामी जी के सीने पर संगीनें तान दी, इस तनातनी में कुछ अनर्थ घटित होता उससे पहले ही अंग्रेज अधिकारी वहां पहुंच गए और गोरखा अधिकारी को रोका, उनके आने से तनी हुई संगीनों नीचे की ओर झुक गई। स्वामी श्रद्धानंद का अदम्य साहस, उनकी वीरता और समाज पर बलिदान देने का जज्बा आज पूरे देश में आग की तरह फैल गया था।

दलितोद्धार सभा के संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द

महर्षि दयानंद सरस्वती और पंडित लेख राम आर्य पथिक के पश्चात स्वामी श्रद्धानंद जी ने शुद्धि आंदोलन का कार्य लगातार चलाए रखा। उन्होंने अस्पृश्यों, दलितों और आदिवासियों के धर्मांतरण पर जो रोक लगाने का महत्वपूर्ण कार्य किया वह अपने आप में अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध हुआ। स्वामी श्रद्धानंद जी सन 1919 में जब अमृतसर कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष निर्वाचित हुए तो उस अधिवेशन में आपने दलितों के उद्धार की बात उठाई, लेकिन महात्मा गांधी और कांग्रेस कार्यकारिणी के सदस्यों ने इस प्रस्ताव की उपेक्षा की, तब स्वामी जी ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा दलितोद्धार सभा की स्थापना की मालाबार और मोपलाओ जैसी बर्बर हिंदुओं के हत्याकांड की घटनाओं को महात्मा गांधी ने यह उनके धार्मिक अधिकारों के अनुरूप कार्य कहकर जब पल्ला झाड़ लिया तब स्वामी श्रद्धानंद ने 1924 में हिंदू नेताओं और कांग्रेसियों को चेतावनी देते हुए कहा था कि यदि आपने अस्पृश्य कहे जाने वाले भाइयों के उद्धार की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया तो मैं आपको सचेत करना चाहता हूं कि वह वह दिन दूर नहीं जब आपके दलित अस्पृश्य भाई आपसे सब तरह का संबंध तोड़ कर दूसरे संप्रदायों में चले जाएंगे।

- शेष पृष्ठ 7 पर

प्रेरक प्रसंग

आर्यसमाज का एक विचित्र विद्वान्

महामहोपाध्याय पण्डित श्री आर्यमुनि जी अपने समय के भारत विख्यात दिग्गज विद्वान् थे। वे वेद व दर्शनों के प्रकाण्ड पण्डित थे। उच्चकोटि के कवि भी थे, परन्तु थे बहुत दुबले-पतले। ठण्ड भी अधिक अनुभव करते थे, इसी कारण रुई की जैकिट पहना करते थे।

वे अपने व्याख्यानों में मायावाद की बहुत समीक्षा करते थे। और पहलवानों की कहानियाँ भी प्राय: सुनाया करते थे। स्वामी श्री स्वतन्त्रानन्दजी महाराज उनके जीवन की एक रोचक घटना सुनाया करते थे। एक बार व्याख्यान देते हुए आपसे पहलवान बोल पड़ा, पण्डितजी! आप-जैसे दुबले-पतले व्यक्ति को कुश्तियों की चर्चा नहीं करनी चाहिए। आप विद्या की ही बातें करें तो शोभा देती हैं।

पण्डितजी ने कहा, ''कुश्ती भी एक विद्या है। विद्याबल के बिना इसमें भी जीत नहीं हो सकती।'' उस पहलवान ने कहा, 'इसमें विद्या का क्या काम? मल्लयुद्ध में तो बल से ही जीत मिलती है।'

पण्डित आर्यमुनिजी ने फिर कहा, 'नहीं, बिना विद्याबल के शरीरबल से जीत असम्भव है।'

पण्डितजी के इस आग्रह पर पहलवान को जोश आया और उसने कहा, 'अच्छा आप आइए और कुश्ती लड़कर दिखाइए।' पण्डितजी ने कहा, 'आ जाइए'।

आर्यसमाज के लोग हैरान हो गये कि यह क्या हो गया? वैदिक व्याख्यान माला - मल्लयुद्ध का रूप धारण कर गई। आर्यों को भी आश्चर्य हुआ कि पण्डितजी-जैसा गम्भीर दार्शनिक क्या करने जा रहा है। शरीर भी पण्डित शिवकुमार शास्त्री-जैसा तो था नहीं कि अखाड़े में चार मिनट टिक सके। सूखे हुए तो पण्डितजी थे ही।

रोकने पर भी पण्डित आर्यमुनि न रुके। कपड़े उतारकर वहीं कुश्ती के लिए निकल आये।

पहलवान साहब भी निकल आये। सबको यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि महामहोपाध्याय पण्डित आर्यमुनिजी ने बहुत स्वल्प समय में उस पहलवान को मल्लयुद्ध में चित्त कर दिया। वास्तविकता यह थी कि पण्डितजी को कुश्तियाँ देखने की सुरुचि थी। उन्हें मल्लयुद्ध के अनेक दाँव-पेंच आते थे। थोड़ा अभ्यास भी रहा था। सूझबूझ से ऐसा दाँव लगाया कि मोटे बालिष्ठाय पहलवान को कुछ ही क्षण में गिराकर रख दिया और बड़ी शान्ति से बोले, 'देखो, बिना बुद्धि-बल के केवल शरीर-बल से कुश्ती में भी जीत नहीं मिल सकती।'

आर्यसमाज का इतिहास साक्षी है कि आर्यसमाज के दीवानों ने ऐसे-ऐसे कार्य किये हैं, जिनके सामने मत-पन्थों के पैगम्बरों के कल्पित चमत्कार फीके पड़ जाते हैं।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

महर्षि दयानन्द सरस्वती के शिष्य, कर्मठ समाजसेवी पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी की अश्रुपूरित श्रद्धांजलि सभा के भावपूर्ण दृश्य

पूज्य पिता श्री महाशय धर्मपाल जी की शांति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा के अवसर पुष्पांजलि अर्पित करने के उपरान्त उपस्थित आर्य संन्यासियों से आशीर्वाद प्राप्त करते श्री राजीव गुलाटी जी एवं श्रीमती ज्योति गुलाटी जी।

पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी को पुष्पांजलि अर्पित करते डॉ. योगानन्द जी शास्त्री, विनय आर्य जी, श्री बच्चन सिंह आर्य एवं प्रियजन

पुष्पांजलि अर्पित करने के उपरान्त महाशय श्री राजीव गुलाटी जी को सान्तवना देते सांसद श्री प्रवेश वर्मा जी, पूर्व सांसद श्री महाबल मिश्रा जी, विश्व हिन्दू परिषद के प्रवक्ता श्री विनोद बंसल जी, श्रीमती वीना आर्या जी, आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री श्री सतीश चड्डा जी, दिल्ली सभा के उप प्रधान श्री अरुण प्रकाश जी

पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी को पुष्पांजलि अर्पित करने के लिए श्रद्धांजलि सभा में उमड़ा हुजूम – दिल्ली एवं दिल्ली एन.सी.आर. से हजारों की संख्या में आर्यजनों ने पहुंचकर अर्पित किए अपने श्रद्धासुमन

श्रद्धांजलि सभा का समय समाप्त होने के उपरान्त भी अपने श्रद्धासुमन अर्पित करने के लिए आते रहे लोग

प्रथम पृष्ठ का शेष

रहा। यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी सम्पूर्णानंद जी, आचार्य सुकामा जी, आचार्य ऋषिपाल शास्त्री, आचार्य शिवा शास्त्री जी के कुशल निर्देशन में कन्या गुरुकुल रूड़की की ब्रह्मचारिणियों द्वारा वेदपाठ किया गया।

कोरोना के चलते सम्पूर्ण सुरक्षा व्यवस्था का रखा गया पूरा ध्यान

यह सर्वविदित है कि कोरोना एक महामारी के रूप में अपना रोद्र रूप दिखा रही है। महाशय जी की श्रद्धांजलि सभा में आने वाले सभी महानुभावों की सुरक्षा को ध्यान में रखकर ग्लब्स, सिर पर टोपी, पैरों में जूतों के कवर, सेनिटाइजर की संपूर्ण व्यवस्था तथा भीड़ जमा न होने के लिए कदम-कदम पर कार्यकर्त्ताओं का निर्देशन, सहयोग की संपूर्ण व्यवस्था की गई थी। सभी के बैठने के लिए पूरा सोशल डिस्टेनसिंग का ध्यान भी रखा गया था।

आदर्श साज सज्जा एवं दिव्य प्रबंधन

आज एस.डी.पब्लिक स्कूल के गेट पर स्वेत द्वार बनाया गया था, सामने सदि के महामानव का दिव्य चित्र ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे महाशय जी स्वयं विराजमान हों। द्वार से लेकर सारे प्रांगण में कारपेट लगाया गया था। द्वार से दांई तरफ सामने कोरोना सुरक्षा की किट देने का स्टाल लगा था और साथ ही महाशय जी की अनुभूत शिक्षाओं का बड़ा सा बोर्ड सबको प्रेरणा दे रहा था। श्रद्धांजलि देने के लिए तीन कतारों की व्यवस्था थी। दांई तरफ महान महाशय जी का यज्ञ करते हुए फोटो और बीच में यज्ञकुंड को फूलों से सजाया गया था, यज्ञ ब्रह्मा, यजमानों के आसन, एक तरफ वेदपाठी कन्याओं का आसन और दूसरी तरफ भजनोपदेशकों सहित पूरी टीम का आसन, वृहद दीप प्रज्वलित थे, दीप के एक तरफ महाशय जी का परिवार और दूसरी तरफ संन्यासी, वान प्रस्थी आदि के बैठने हेतु आसन लगे थे। इस सारी साज-सज्जा के केंद्र में सामने महाशय जी का प्रसन्न चित्त मुद्रा में मनोहारी चित्र, फूलों से सजाया गया था, जो कि सबसे बड़ा आकर्षण था, उसके बाईं और दाईं और लिखे हुए सुभाषित सारा वातावरण प्रेरणाप्रद था, श्रद्धांजलि देने वाले जैसे आगे बढ़ते थे तो सामने श्री राजीव गुलाटी जी, श्रीमती ज्योति गुलाटी जी सबके प्रति धन्यवाद व्यक्त कर रहे थे। साथ ही थोड़ा आगे बढ़ने पर महाशय जी के प्रति अपने भावसुमन अर्पित करने हेतु रजिस्टर-डायरी रखी हुई थी, जिनमें लोग अपने मनोभाव व्यक्त कर रहे थे।

श्रद्धांजलि सभास्थल से निकलते हुए बांई ओर जलपान की व्यवस्था एक बड़े ग्राऊंड में की गई थी, जहां पर चाय-काफी और बिस्किट मटठी आदि पर्याप्त दूरी का ध्यान रखते हुए एक सुंदर सुव्यवस्था के साथ लगातार चलती रही। इसके साथ ही निकास द्वार पर महाशय परिवार की और से महाशय जी का साहित्य और उसके प्रसाद देकर आगंतुक महानुभावों को विदाई दी जा रही थी। इस संपूर्ण व्यवस्था को सुचारू रूप से बनाने और चलाने के लिए आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के आर्य वीर श्री बृहस्पति आर्य जी के निर्देशन में कई दिनों से दिन रात लगे हुए थे। बड़े ही प्रेम सौहार्द के वातावरण में पूरी सुरक्षा व्यवस्था के साथ श्रद्धांजलि सभा संपन्न हुई।

महाशय धर्मपाल जी की स्मृति में लगातार चलता रहा यज्ञ पारिवारिक जनों के साथ-साथ प्रियजन एवं आर्यजन भी देते रहे आहुतियां। शान्ति यज्ञ के अवसर पर वेदपाठ करती कन्या गुरुकुल रुड़की की ब्रह्मचारिणियां एवं भजन प्रस्तुत करते श्री अंकित उपाध्याय जी एवं साथी।

यज्ञ के मुख्य यजमान महाशय जी के सुपुत्र श्री राजीव गुलाटी जी, पुत्रवधु श्रीमती ज्योति गुलाटी जी, महाशय जी के दामाद एवं सुपुत्रियां तथा उनके बच्चों ने अपने करकमलों से यज्ञ में आहुतियां दी। इस अवसर पर अनेक अन्य महानुभावों ने भी यज्ञ में हवि देकर पुण्य अर्जित किया। यज्ञ के प्रारंभ में, मध्य में और अंत में श्री अंकित उपाध्याय जी के भावपूर्ण भजनों के माध्यम से ईश्वर की महिमा, भक्ति, प्रार्थना और उपासना का मनोहारी गान होता रहा। संपूर्ण वातावरण भक्तिमय था और महाशय जी के प्रति सबके मन तथा आत्मा भाव विभोर हो गए थे।

पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी को ट्वीट के माध्यम से श्रद्धांजलि

श्रम, संघर्ष, सदाशयता, दान और करुणा की प्रतिमूर्ति, अद्भुत जीवट और प्रसन्नता के अपूर्व निर्झर, पीठ पर पांच थपकियों से अपने स्नेह का संस्पर्श देने वाले, दयानन्द के आशय के संवाहक महाशय धर्मपाल आर्य का देहावसान समाज की बड़ी क्षति है। प्रभु परिवारजनों को दुख सहने की शक्ति प्रदान करें।

- आचार्य देवव्रत, महामहिम राज्यपाल गुजरात

मसालों के बादशाह, एम.डी.एच के मालिक पद्मभूषण महाशय धर्मपाल गुलाटी जी के निधन का समाचार दुखद है। अपनी मेहनत और ईमानदारी के साथ सफलता के नए आयाम पर पहुंचने का उनका सफर समाज के लिए प्रेरणादायी है। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शांति एवं परिजनों को यह दुख सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

- मनोहरलाल खट्टर, मुख्यमन्त्री, हरियाणा सरकार

I extend my condolence on the demise of Shri Mahashay Gulati Ji who contributed immensely for the welfare of our country and exhuded positivity wherever he went. Hope the Almighty will grant strength to his family and friends to cope with this irreparable loss. **- Prem Singh Tamang , C.M. Sikkim Govt.**

एम.डी.एच मसालों के जनक महाशय धर्मपाल गुलाटी जी के निधन पर गहरा शोक प्रकट करता हूं। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें।

- प्रकाश जावडेकर, केन्द्रीय मानव संसाधान विकास मन्त्री

भारत के प्रतिष्ठित कारोबारियों में से एक महाशय धर्मपाल जी के निधन से मुझे दु:ख की अनुभेति हुई है। मैं उनके परिवार के प्रति अपनी संवेदना व्यक्ति करता हूं।

- डॉ. जीतेंद्र सिंह, केन्द्रीय मन्त्री, भारत सरकार

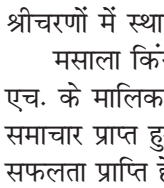

भारतीय मसालों की सुगन्ध व उत्कृष्टता को पूरे विश्व में फैलाने वाले एमडीएच के मालिक तथा देश के महशहूर उद्योगपति व समाजसेवी, पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी के निधन से मैं अत्यन्त आहत और दुखी हूं। वास्तव में वे एक व्यक्ति ही नहीं, बल्कि अपने-आप में एक बड़ी संस्था थे। देश उनके अतुलनीय योगदान को हमेशा याद करता रहेगा। ईश्वर उनकी दिवंगत आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दें। **- *जगदीश मुखी, महामहिम राज्यपाल, असम***

मसाला किंग के नाम से प्रसिद्ध वरिष्ठ समाजसेवी व एम.डी. एच. के मालिक महाशय धर्मपाल गुलाटी जी के निधन का दुखद समाचार प्राप्त हुआ। वे संघर्ष और परिश्रम के अद्भुत प्रतीक थे। सफलता प्राप्ति हेतु उनका संघर्ष पूर्ण जीवन हर देशवासी को प्रेरित करता है। ईश्वर दिवंगत की आत्मा को शांति दे।

- डॉ. हर्षवर्धन, केन्द्रीय स्वास्थ्य मन्त्री, भारत सरकार

परिश्रम और लगन से सफलता के नए मापदण्ड स्थापित करने वाले सुप्रसिद्ध कारोबारी पद्मभूषण श्री धर्मपाल गुलाटी जी के निधन का दुखद समाचार मिला। समाज सेवा में समर्पित उनका जीवन सभी के लिए प्रेरणादायी है। ईश्वर उन्हें अपने चरणों में स्थान थे। व परिवार को दुख सहने की शक्ति प्रदान करे।

- जगत प्रकाश नड्डा, राष्ट्रीय अध्यक्ष, भाजपा

भारत के प्रतिष्ठित कारोबारियों में से एक महाशय धर्मपाल गुलाटी जी के निधन का दुखद समाचार प्राप्त हुआ। छोटे व्यवसाय से शुरू करने के बावजूद उन्होंने अपनी एक अलग पहचान बनाई। ईश्वर दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में स्थान दे व परिजनों को इस दुख को सहने की शक्ति दे।

- नरेन्द्र सिंह तोमर, केन्द्रीय कृषि मन्त्री, भारत सरकार

महाशय जी के प्रति भारत राष्ट्र, आर्य जगत और विदेशों से प्राप्त शोक प्रस्ताव

श्री रामनाथ कोविन्द, महामहिम राष्ट्रपति भारत
प्रो. जगदीश मुखी, महामहिम राज्यपाल असम
श्री गंगा प्रसाद, महामहिम राज्यपाल, सिक्किम
श्री ओम बिड़ला, लोकसभा अध्यक्ष
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली
अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ दिल्ली
महर्षि दयानन्द गोसम्वर्द्धन केन्द्र, गाजीपुर, दिल्ली
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली
आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब
गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य प्रतिनिधि सभा, म्यॉमार (बर्मा)
आर्य प्रतिनिधि सभा हालैण्ड
आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिणी अफ्रीका
आर्य समाज दक्षिणी अफ्रीका
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
प्रान्तीय आर्य महिला सभा दिल्ली राज्य
इन्द्रप्रस्थ विश्व हिन्दू परिषद दिल्ली
विश्व हिन्दू परिषद इन्द्रप्रस्थ
श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा, पहाड़गज
श्री सनातन धर्म मन्दिर जनकपुरी, नई दिल्ली
दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी, नई दिल्ली
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, नई दिल्ली
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पश्चिमी विभाग, दिल्ली
पूर्वी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल, सूरजमल विहार,
वेद प्रचार मण्डल, पश्चिमी दिल्ली
वेद प्रचार मण्डल उ.प. दिल्ली, नई दिल्ली
पू. दि.आर्य महिला वेद प्रचार मण्डल, दिल्ली
केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली
आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश, मिन्टो रोड
आर्य वीरांगना दल, दिल्ली प्रदेश
अखिल भारतवर्षीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा
भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, दिल्ली
चन्द्रवती चौधरी ट्रस्ट आर्य अनाथालय
राष्ट्रीय सिख संगत, पहाड़ गंज नई दिल्ली
आर्य पुरोहित सभा दिल्ली
माता चनन्न देवी हॉस्पिटल, जनकपुरी, नई दिल्ली
आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली
आर्य समाज कीर्तिनगर नई दिल्ली
आर्य समाज शादी खामपुर नई दिल्ली
आर्य समाज पंखा रोड 'सी' ब्लॉक नई दिल्ली
आर्य समाज यमुना विहार दिल्ली
आर्य समाज झिलमिल कालोनी, दिल्ली
आर्य समाज सै. 3-6 एवं विजय विहार, रोहिणी
आर्य समाज सै. 11 द्वारका, नई दिल्ली
आर्य समाज मंदिर पालम कालोनी नई दिल्ली
आर्य समाज मन्दिर खजूरी खास, दिल्ली-90
आर्य स.नवीन शाहदरा एवं गौ ग्रास सेवा समिति
आर्य समाज विकास नगर उत्तम नगर, नई दिल्ली
आर्य समाज टैगोर गार्डन विस्तार नई दिल्ली
आर्य समाज पश्चिम पुरी, नई दिल्ली
आर्य समाज आर्य नगर पहाड़गज, नई दिल्ली
आर्य समाज गोविन्दपुरी, कालकाजी, नई दिल्ली
आर्य समाज, आनन्द विहार, नई दिल्ली
आर्य समाज महानवीर नगर, नई दिल्ली
आर्य समाज केशवपुरम, दिल्ली
आर्य समाज, लक्ष्मी नगर दिल्ली
आर्य समाज ग्रेटर कैलाश-1, नई दिल्ली
आर्य समाज-वेद मन्दिर, पीतमपुरा, दिल्ली
आर्य समाज निर्माण विहार दिल्ली
आर्य समाज मॉडल बस्ती शादीपुरा, नई दिल्ली
आर्य समाज रोहिणी, दिल्ली
आर्य समाज मोहम्मद पुर, नई दिल्ली
आर्य समाज सागरपुर, नई दिल्ली
आर्य समाज प्रताप नगर, दिल्ली
आर्य समाज न्यू मोती नगर, नई दिल्ली
आर्य समाज अशोक नगर, नई दिल्ली
आर्य समाज ए-ब्लॉक जनकपूरी, जनकपूरी
आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली
आर्य समाज साकेत, नई दिल्ली
आर्य समाज मन्दिर, जहॉगीरपुरी दिल्ली
आर्य समाज मन्दिर, रानी बाग, दिल्ली
आर्य समाज सैनिक विहार, दिल्ली
आर्य समाज विवेक विहार, दिल्ली
आर्य समाज सूरजमल विहार, दिल्ली
आर्य समाज रानी बाग, दिल्ली
आर्य समाज दरिया गंज, नई दिल्ली
आर्य समाज मोहन गार्डन, उत्तम नगर, नई दिल्ली
आर्य समाज रोहतास नगर, शाहदरा, दिल्ली
आर्य समाज मन्दिर, मंगोलपुरी, दिल्ली
आर्य समाज मानसरोवर गार्डन, नई दिल्ली
आर्य समाज सरिता विहार, नई दिल्ली
आर्य समाज नांगलराया, नई दिल्ली
आर्य समाज बिड़ला लाइन्स, दिल्ली
आर्य समाज सरस्वती विहार, दिल्ली
आर्य महिला आश्रम न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली
शान्ति देवी आर्य कन्या गुरुकुल, दिल्ली
गुरुविरजानन्द-संस्कृतकुलम्, नई दिल्ली
आर्य गुरुकुल-रानी बाग, दिल्ली
आर्य गुरुकुल तिहाड़ ग्राम, नई दिल्ली
आर्ष गुरुकुल आर्य नगर, पहाड़गंज, नई दिल्ली
महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल रोहिणी, दिल्ली
आर्य वैदिक पाठशाला (कन्या/बाल) पहाड़गंज
बिरला आर्य गर्ल्स सीनियर सैकेन्ड्री स्कूल
आर्य विद्या मंदिर प्रताप नगर, दिल्ली
रघुमल आर्य कन्या उ.मा. विद्यालय राजा बाजार,
माता चनन्न देवी हॉस्पिटल कर्मचारी यूनियन
महाशय धर्मपाल सरस्वती विद्या मन्दिर, ढांसा,
लीलावंती सरस्वती शिशु मंदिर टैगोर गार्डन,
माता लीलावन्ती सरस्वती विद्या मंदिर, हरि नगर
समर्थ शिक्षा समिति (पश्चिमी विभाग)
समर्थ शिक्षा समिति, झण्डेवालान, नई दिल्ली
समर्थ शिक्षा समिति उत्तरी विभागीय समिति
सी.एल.भल्ला डी.ए.वी. उ.मा.वि., करोलबाग
विद्या भारती अ.भा. शिक्षा संस्थान, नई दिल्ली,
आशीर्वाद स्पेशल एजुकेशन स्कूल पश्चिम विहार,
परम आनन्द गऊ ग्रास सेवा राधेपुरी, कृष्णा नगर
जन जागरण एवं समाज कल्याण समिति, दिल्ली
दौड़ती दिल्ली, तिलक नगर, नई दिल्ली
वैदिक सत्संग मण्डल रोहिणी, दिल्ली
आर्य प्रकाशन अजमेरी गेट, दिल्ली
रिटायर्ड पर्सन वेलफेयर एसोसिएशन, कीर्ति नगर
भारतीय जनता पार्टी, उत्तम नगर, नई दिल्ली
श्री गुरु रामराय उदासीन आश्रम, पंचकुईयां रोड
स्वदेशी जागरण मंच, दिल्ली
भारतीय उद्योग व्यापार मण्डल, नई दिल्ली
संस्कृत शिक्षक संघ, दिल्ली
शहीद भगतसिंह ट्रेडर्स वेल.एसो. नजफगढ़,
प्रकाश श्रिंक पैक इंडिया, नागलोई, दिल्ली
योगेश्वर श्री कृष्ण समिति, जिला एटा, उ.प्र.
म. दयानन्द सेवा समिति हिम्मतपुर काकामई, एटा
श्री कृष्ण आर्ष सेवा समिति (पंजी) एटा उ.प्र.
आर्ष गुरुकुल एटा (उ.प्र.)
वैदिक सेवा आश्रम फलबारी, सिलीगुड़ी,
मैसेज रामगोपाल मिठन लाल, जीन्द हरियाणा
बन्नूवाल बिरादरी, फरीदाबाद
भाटिया सेवक समाज, फरीदाबाद
वेद प्रचार मण्डल कैथल
आर्य समाज नेमदार गंजनवादा विहार
आर्य समाज अजमेर
आर्य समाज, कोटा राजस्थान
श्री रूपमुनि रजत गुरु सेवा समिति, मारवाड़
मनोहरलाल एण्ड सन्स, बानसूर अलवर
आर्य समाज, गुरुग्राम
डा. राम बिलास जी दक्षिणी अफ्रीका
धर्मवीर शास्त्री, नई दिल्ली
सुरेन्द्र चौधरी रोहिणी, दिल्ली
गोविन्दराम अग्रवाल, दिल्ली
केशव सहकारी बैंक लिमिटेड
दधीचि देहदान समिति
उमेश कुमार गुलाटी, नारायणा विहार
आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री
श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा
आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका
दैनिक पंजाब केसरी, दिल्ली
आर्य सभा मॉरिशस
केन्द्रीय आर्यसमाज नेपाल
आर्य दिवाकर, सूरीनाम
महाशय धर्मपाल आर्य विद्या निकेतन, बामनिया
महाशय धर्मपाल आर्य विद्या निकेतन, धनश्री
महाशय धर्मपाल वेद रिसर्च फाउंडेशन, केरल

Is there really a God, How is it?

This Article is published under the Swadhyay Mitra Yojna of Delhi Arya Pratinidhi Sabha. You may please send your Lekh/article on belhalf or your swadhyay of vedic litreture in either Hindi or English language. - Editor

There cannot be beautiful creations without a creator, there cannot be beautiful rules without a regulator. Without a manager there cannot be beautiful arrangements. No one can be knowledgeable (being enlight ened) without a characterized Guru. Just as Gold cannot create jewellery on its own, similarly, nature cannot be created simply by matter. What will be the greater evidence in Ishwar Siddhi? All the animals, birds, living creatures, trees & plants and humans to live in are due to such a beautiful arrangement of air, water and light-spread that is a great proof of existence of supreme lord, i.e. called God. One who adjoins billions of atoms to their origin, keep in position and then pull apart impetuously of billions of trillions of solar circles is called **God,** matches everything in tandem and perishes as cyclical**.**

1. Everything should have the creator of the thing that has shape & design. The engineer who makes the house is visible, but the God who makes the creation is not seen, He comes into experience.

2. Sun rises at set time. After a thousand years from today, sunrise, moonrise, tides & ebbs, when it will happen, can be told because the world is bound by certain rule. H2/O produces water, not sulfuric acid. The entire formula of science is based on this basis because there are rules in nature. Where there is a rule, there must be a regulator or regulator of that rule. Rules do not run without control.

3. Atoms were present in the beginning of the universe. Those atoms need someone to give motion initially a first. Atoms are just motionless within themselves and cannot move themselves.

4. Fruits to fill the stomach, milk to nourish the baby, medicines scattered in the forests for the prevention of human diseases, milk in the mother's breasts immediately with the birth of the child ... All these things are enough to prove that there is certain purpose of creation of universe, it is not speculative, it needs some knowledgeable power behind it. Dead nature cannot set goals.

5. How well the nose, ears, mouth of man are made, butterflies have velvet colour in their wings, what fragrance is there in the flowers, the sight of the rising and setting sun captivates the human mind. Each composition has a uniqueness. **This uniqueness proves the existence of the creator.**

6. Experiences were made by keeping newly born children isolated in different varied groups. They could not speak any language even after they turned twenty. Because human learns language by imitation but cannot make language on his own without copying. As the mother speaks, child also speaks. He Speaks the language of environment surrounding! In the beginning, when there was no human speaking of language, then which language did humans copy. The person who gave him his voice is God. God gives language in the beginning after creation.

7. Today there is knowledge in the world. There should be such a source of knowledge where this knowledge has sieved to us from. There was not even a language in the beginning, then where did knowledge come from. If knowledge is a soul, language is its body. Knowledge cannot exist without language. He who gave the language imparted knowledge, too. The name of that initial source of knowledge is God.

8. Yama, niyam, asana, pranayama, pratyahara, dharna, meditation, samadhi; That is, through Ashtanga Yoga, millions of yogis have revealed that Creator God. Expounding does not mean just looking through the eyes. To speak directly to God means to experience the knowledge and joy of God.

9. One child is born blind, the other one is with healthy eyes. One lame and the other is perfect. One mad, the other with sharp acumen. Some were born in the house of riches, some others in the house of poor. Who wants to be born blind, lame or organ fragmented or to be born in a pauper's house? But it so happens. Humans never want to bestow fruits of their misdeeds after committing sins, but that powerful judge called God gives birth to them in blind, lame, lulled bodies to suffer punishment according to gravity of sins. Accordingly births are in the homes of rich and poor. Good and bad deeds done by human beings cannot give results on their own irony. It is God only to see to operate.

10. The speed of light is 1,86,000 miles per second. If we light a match-stick, then after one second its light will spread for 1,86,000 miles. The sun is so far away from us that the light reaches the earth in about nine minutes. The circumference of our Earth is 25000 miles. This sun is so big that 13 lakhs of earths like ours should be included in it. But still sun of ours may not be considered very big. The diameter of Jyestha-nakshatra is 450 times the diameter of sun. That is, our nine crores of such suns will merge into a single Jyestha-nakshatra. Our Aakash Ganga has another constellation in the other Akash Ganga, "Asdoradus", the light

Continued Page No. 7

पृष्ठ 3 का शेष

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ...

स्वामी श्रद्धानंद जी की यह दूरदृष्टि 32 वर्ष बाद तब सत्य सिद्ध हुई जब 1956 में डॉक्टर भीमराव अंबेडकर ने नागपुर में लाखों दलितों के साथ बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया था। मुगल काल में हिंदू से मुस्लिम बने अपने भाइयों को वापिस हिंदू बनाने के लिए स्वामी जी ने अथक परिश्रम और पुरुषार्थ कर भारतीय हिंदू शुद्धि सभा, राजपूत शुद्धि सभा आदि का निर्माण कर सन 1922 में आगरा, मथुरा, भरतपुर और मेवात के लगभग 8,50000 मुसलमानों को स्वधर्म में लाने का कार्य महात्मा हंसराज, पंडित भोज दत्त आर्य मुसाफिर आगरा तथा राजपूती नेताओं के साथ मिलकर किया, ऐसे महान निर्भीक संन्यासी को शत शत नमन।

स्वामी श्रद्धानंद जी का पूरा जीवन महर्षि दयानंद सरस्वती के द्वारा निर्देशित राष्ट्र एवं मानव सेवा को समर्पित रहा। धीरे-धीरे स्वामी जी की उम्र बढ़ रही थी किंतु फिर भी वे लगातार राष्ट्र सेवा में समर्पित थे। 23 दिसंबर 1926 का दिन था, स्वामी जी अपने कमरे में आराम कर रहे थे, इतने में एक व्यक्ति सीढ़ियों से चढ़कर स्वामी जी के कमरे में आ रहा था, बाहर खड़े धर्म सिंह से उसने पूछा कि स्वामी जी कहां है? उन्होंने बताया कि स्वामीजी रूग्ण अवस्था में है, अभी किसी से नहीं मिल सकते। स्वामी जी ने आवाज सुनी तो धर्म सिंह से पूछा कौन है? उन्होंने कहा कि कोई मियां है, आपसे बात करना चाहता है, मैंने मना कर दिया है, तब स्वामी जी ने पूछा कैसे आना हुआ? उसने कहा कि इस्लाम के बारे में कुछ पूछना चाहता हूं, यह कहकर वह एक तरफ खड़ा हो गया। स्वामी जी ने कहा कि इस समय हम बीमार हैं कुछ दिन बाद आना सब बता देंगे। इसके बाद उसने पीने के लिए पानी मांगा, स्वामी जी ने धर्म सिंह से पानी लाने के लिए कहा और जैसे ही धर्म सिंह पानी लाने के लिए गए और मियां को पानी पीने के लिए दिया। वह पानी पीते ही स्वामी जी की ओर दौड़ा और कमरे के भीतर घुसकर स्वामी जी के सीने पर पिस्तौल से फायर करने लगा, धर्म सिंह को उसे रोकने का अवसर भी न मिला और उसने स्वामी जी के नजदीक जाकर गोलियां दाग दी, धर्म सिंह ने दौड़कर पीछे से उसको पकड़ लिया फिर भी वह गोलियां चलाता रहा। धर्म सिंह ने आगे होकर उसको भुजाओं से जकड़ लिया और इस पकड़ा धकड़ी, गुत्थमगुत्था में धर्म सिंह को भी गोली लगी, गोली चलने की आवाज सुनकर दूसरे कमरे से उनके निजी सचिव धर्मपाल जी भी भाग पर आए और उन्होंने अब्दुल रशीद को कसकर पकड़ लिया, उधर धर्म सिंह के चिल्लाने की आवाज सुनकर स्वामी चिदानंद जी भी दौड़े चले आए, पंडित धर्मपाल इस हत्यारे को पकड़े हुए थे और एक तरफ स्वामी श्रद्धानंद चारपाई पर पड़े थे, इस आपाधापी में शुद्धि सभा के एक अन्य अधिकारी लाला मेहर चंद पुरी जी भी आ गए थे। उन्होंने इस भयावह दृश्य को देखा और झट से पुलिस को फोन लगाया। प्रोफेसर इंद्र विद्यावाचस्पति शुद्धि कार्यालय में उस समय थे, वे भी दौड़कर स्वामी जी के कमरे में आ गए और उन्होंने अपने पिता को खून से लथपथ हालत में देखा। स्वामी जी का शरीर मृत अवस्था में था, उनके सिरहाने की ओर धर्मपाल किसी व्यक्ति को दबोचे हुए थे, थोड़ी देर में पुलिस आ गई , एक पुलिस अधिकारी ने रिवाल्वर दिखाकर हत्यारे के हाथ से उसकी पिस्तौल छीन ली।जो अभी तक उसके हाथ में ही थी।अब्दुल रशीद को तत्काल बंदी बना लिया गया और दूसरे दिन स्वामी जी के शव की परीक्षा की गई ,उनके सीने में और पसली में गोलियां लगी थी, जिससे उनका सीना छलनी हो गया था। अब्दुल रशीद पर हत्या का संगीन आरोप लगा, जब कोर्ट ने उस पर हत्या का मुकदमा चल रहा था तो मुसलमानों ने उसे पागल घोषित करने का प्रयास किया और जमानत पर छुड़ाने की कोशिश की, पर वे सफल न हो सके। इसके बाद 22 नवंबर सन 1926 को दिल्ली के सेंट्रल जेल में अब्दुल रशीद को फांसी पर लटकाया गया। 24 दिसंबर को स्वामी जी की अंतिम यात्रा निकाली गई, जिसमें देश के अनेक प्रांतों से हजारों लोग दिल्ली आए थे उनकी यात्रा अभूतपूर्व थी, अब तक किसी भी व्यक्ति को अंत्येष्टि में इतने लोग इकट्ठा नहीं हुए थे जितने स्वामी जी की अंतिम यात्रा में आए थे। लोगों को कहना है कि इस अंतिम यात्रा में पांच से छह लाख के करीब लोग शामिल हुए थे। अंत में निगम बोध घाट पर स्वामी जी के पार्थिव देह को मुखाग्नि दी गई। भारतीय एकता के गगन का सितारा अपनी प्रखर ज्योति को जगमग करता हुआ अंतर्ध्यान हो गया।

पृष्ठ 6 का शेष

running at the speed of one lac eighty six thousand miles per second reaches the earth from there in 102 years. The diameter of that constellation is 1400 times that of our Sun. Scientists say that far larger than this, there are countless constellations in the sky. Think that any six-footed or ten-footed man, however powerful he may be, can build these constellations, planets, stars or giants comets? Can he even arrive there? Those who say that God is real, if they consider the vastness of the world, then it will be clear that no matter how powerful it is, no matter how vast, it cannot create this huge universe. He should be ubiquitous who can reach there and only the formless can be ubiquitous, the omnipotent and omnipresent!. Look at the creation of the baby in the mother's womb, the eyelids, the eye pupils are being formed. Can anyone of physical form make this real original shape? Never!

CONCLUSIVE FORA: Therefore God exists and is formless and omnipresent. Vaidik scriptures show God as true, formless, omnipotent, just, merciful, unborn, infinite, no sort of disorderliness, eternal, unique, omnipresent, omnipotent, omniscient, never to be old, immortal, fearless, everlasting, holy, creator, charmer, fortitude, karma Provider and salvation provider are stated. **God has eternal names because of his eternal qualities, and he is known by his mega personal name as Aum. (Yajurveda - 40.1, 5, 8,15).**

- Sudhir Kumar Bansal
Jt. Sec., Arya Samaj Central,
Sec-15, Faridabad (HR)

शोक समाचार

श्री इन्द्रसेन साहनी का निधन

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश पार्ट-1 के पूर्व अधिकारी एवं कर्मठ सदस्य श्री इन्द्र सेन साहनी जी का दिनांक 12 दिसम्बर, 2020 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 15 दिसम्बर, 2020 को 3-4 बजे जूम के माध्यम से ऑनलाइन सम्पन्न हुई।

प्राचार्य यज्ञशरण कुलश्रेष्ठ का निधन

आर्य समाज नांगलोई दिल्ली के संस्थापक सदस्य, शिक्षाविद प्राचार्य यज्ञ शरण कुलश्रेष्ठ जी का 24 नवंबर 2020 को 92 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

श्री अभिमन्यु चावला जी को मातृशोक

आर्यसमाज नवीन शाहदरा के संरक्षक एवं पूर्वी दिल्ली वेद प्रचार मंडल के उप प्रधान श्री अभिमन्यु चावला जी की पूज्यमाता श्रीमती रामदेवी चावला जी का दिनांक 11 दिसम्बर की रात्रि में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 12 दिसम्बर को वैदिक रीति साथ निगम बोध घाट पर हुआ।

आचार्य श्री नागेन्द्र कुमार जी का निधन

नि:शुल्क गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या, फैजाबाद के आचार्य श्री नागेन्द्र कुमार जी का 22 नवम्बर, 2020 को प्रात: 6:30 बजे निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

श्री नाथुभाई डोडिया जी का निधन

आर्यसमाज भरुच (गुजरात) के मन्त्री एवं साहित्य प्रेमी श्री नाथुभाई डोडिया जी का दिनांक 7 दिसम्बर, 2020 को 78 वर्ष की आयु कोरोना के कारण निधन हो गया। उनके द्वारा लगभग 100 से अधिक पुस्तकों की रचना, अनुवाद एवं प्रकाशन किया गया

सूबेदार अनंगपाल सिंह जी को पत्नीशोक

आर्यसमाज नत्थूपुरा के उप प्रधान सूबेदार अनंगपाल सिंह जी की धर्मपत्नी श्रीमती राजबाला देवी जी का दिनांक 12 नवम्बर को लगभग 62 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज कीर्ति नगर
नई दिल्ली-110015

प्रधान	: श्री सतीश चड्डा
मंत्री	: श्री विनीत बहल
कोषाध्यक्ष	: श्री सुरेश तेजी

आर्य समाज सुन्दर विहार
नई दिल्ली-110088

प्रधान	: श्री कंवरभान खेत्रपाल
मंत्री	: श्री अमरनाथ बत्रा
कार्य. मन्त्री	: श्री संजीव आर्य
कोषाध्यक्ष	: श्री प्रहलाद सिंह आर्य

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 14 दिसम्बर, 2020 से रविवार 20 दिसम्बर, 2020

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 17-18/12/2020 (गुरु-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 16 दिसम्बर, 2020

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के अधिकारी एवं कार्यकर्ताओं को आवश्यक निर्देश

आर्य वीर दल के सभी अधिकारी तथा कार्यकर्ता निम्नलिखित पर्व समय अनुसार उत्साह के साथ अवश्य ही मनाएं

19 दिसंबर, 2020

पंडित राम प्रसाद बिस्मिल का बलिदान दिवस प्रत्येक शाखा में बड़ी धूमधाम से मनाया जाए।

23 दिसंबर, 2020

स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस प्रत्येक शाखा में बड़े ही उत्साह के साथ मनाया जाए, जिसमें विचार गोष्ठी, प्रचार यात्रा, भाषण प्रतियोगिता, गीत प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया जाए।

14 जनवरी, 2021

मकर सक्रांति पर्व बड़ी धूम-धाम से मनाया जाए, जिसमें प्रत्येक शाखा स्थल पर तथा गांव में मुख्य स्थानों पर यज्ञों का आयोजन गांव के गणमान्य व्यक्तियों के सहयोग से किया जाए।

23 जनवरी, 2021

नेताजी सुभाष चंद्र बोस जी की जयंती प्रत्येक शाखा में बड़ी धूमधाम से मनाए।

26 जनवरी, 2021

आर्य वीर दल स्थापना दिवस एवं गणतन्त्र दिवस के रूप में प्रत्येक शाखा में बड़े उत्साह के साथ मनाया जाए तथा व्यायाम प्रदर्शन का आयोजन भी किया जाए।

नोट = सभी अधिकारी, कार्यकर्ता एवं आर्यवीर कार्यक्रम में आवश्यक दूरी तथा मास्क का विशेष ध्यान रखें।

निवेदक

(सत्यवीर शास्त्री)
प्रधान संचालक

(वेद प्रकाश आर्य)
कार्यकारी महामंत्री

प्रतिष्ठा में,

विश्व का पहला वेद आधारित लाइव टीवी चैनल

ARYA SANDESH TV एप को डाउनलोड करें।

एप्प डाउनलोड करने के लिए लिंक पर जाएं - https://bit.ly/2OWyt2x

वैदिक धर्म के सन्देश को विश्व में प्रसारित करने के लिए यह सन्देश अधिक से अधिक लोगों को फॉरवर्ड करें एवं एप्प डाउनलोड कराएं।

'महर्षि के लाल महाशय धर्म पाल' तव कोटि नमन

आर्य जगत के शीर्ष पुरोधा,
गूंज रहे यश पृथ्वी, गगन।
एम.डी.एच. विख्यात नाम्ना,
शत शत नमन सहस्त्र वन्दन।।

बने प्रेरणास्रोत सभी के,
यज्ञ, दान, सेवा, तप भारी।
त्याग, योगमय जीकर जीवन,
पाई अतुलित धन सामिग्री।
भामाशाह बन खुले हाथ से,
धर्म पर धन करते रहे अर्पण।।
एम.डी.एच. विख्यात नाम्ना,
शत शत नमन सहस्त्र वन्दन।।

कर्म न हो कोई छोटा वाला,
सफर रहा तांगे से मसाला।
सिखलाया संघर्ष में हर्ष है,
एकमेव उद्देश्य विशाला।
सीखलो ए दुनियाँ वालो,
मेरा-एम., धन-डी., हर्ष-एच. करे
जग उपवन।।
एम.डी.एच. विख्यात नाम्ना,
शत शत नमन सहस्त्र वन्दन।।

पद, पैसा औ प्रतिष्ठा परिजन,
सब उसके पीछे चलते।
जिसके रक्त से त्याग, प्रेम,
सेवा, जुनून धर्म पर चढ़ते।
माँ भारती के बनकर लाल,
चढ़ गए चरण रज हो चंदन।।
एम.डी.एच. विख्यात नाम्ना,
शत शत नमन सहस्त्र वन्दन।।

अमर रहेगी सदा कीर्ति,
गाये गौरव भारत विशाल।
'वयं स्याम पतयो रयिणाम्'
सार्थक सूक्ति करी चिर काल।
अंतर्राष्ट्रीय आर्य शिरोमणि,
'विमल' अमर पग कोटि वंदन।।
एम.डी.एच. विख्यात नाम्ना,
शत शत नमन सहस्त्र वन्दन।।

- दर्शनाचार्या विमलेश बंसल आर्या
आर्यसमाज संतनगर, पूर्वी कैलाश
नई दिल्ली

आर्य समाज से सोशल मीडिया पर जुड़ें

YouTube	Facebook	Twitter	Whatsapp
Youtube Channel	Facebook Page	Twitter Handle	Whatsapp Channel
@thearyasamaj	@thearyasamaj	@thearyasamaj	9540045898
Subscribe	Like	Follow	इस नम्बर को अपने मोबाइल में save करें और अपना नाम व स्थान लिखकर भेजें
सब्सकाईब करें	लाइक करें	फॉलो करें	

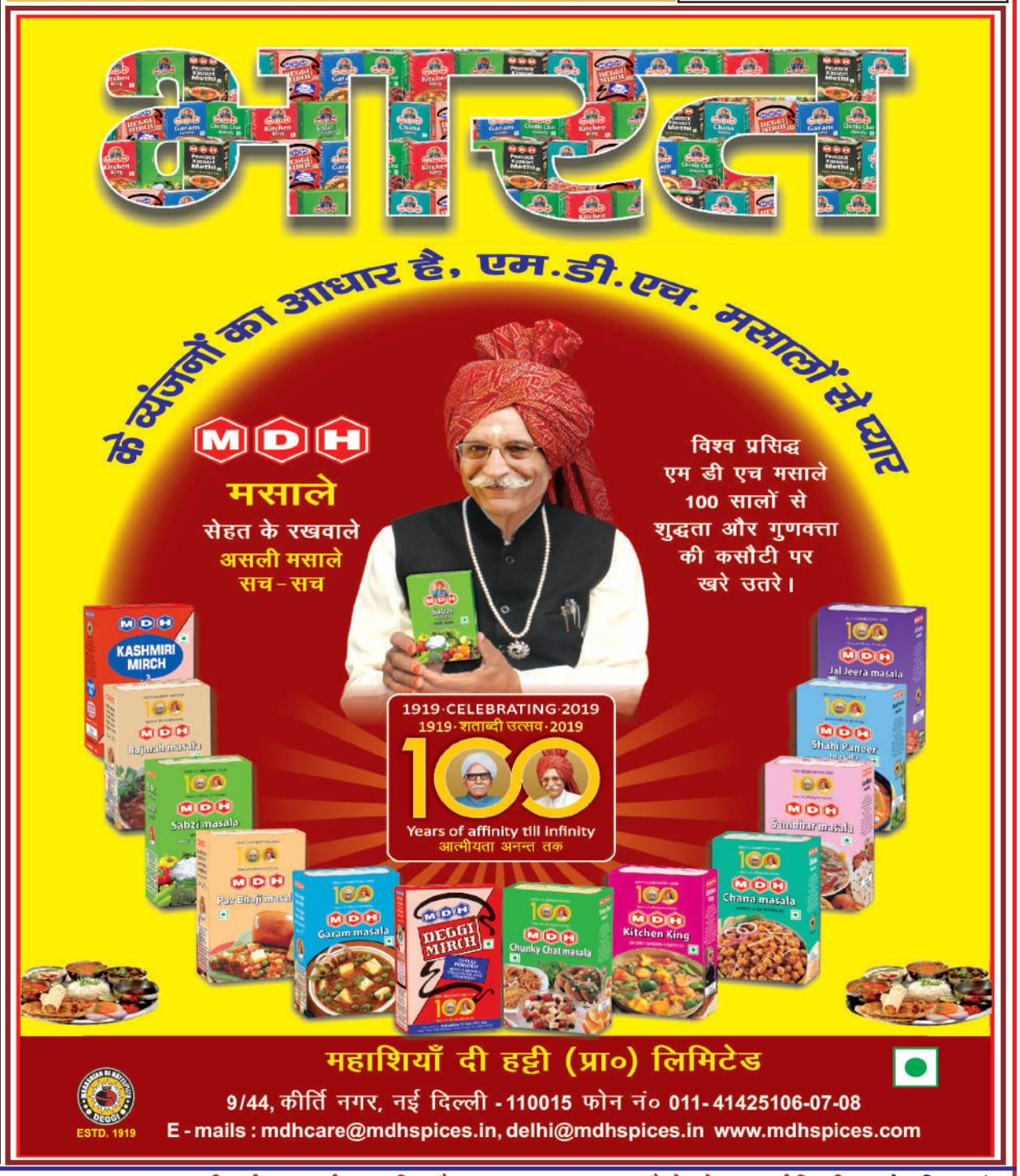

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह